कोशी कॉलोनी सँ किसुन कुटीर धरि

□ केदार कानन

समय अजीब होइत छैक। अपन गर्भ मे कतेक रास प्रसंग नुकौने चुपचाप बीतैत रहैत छैक। समयक ओहि खंड मे अनेक तीत-मीठ, अनेक दुख-पीड़ा, अनेक सुखद स्मृति नुकायल रहैत छैक। कहियो हमसभ ओहि स्मृतिक गर्भ मे जाइत छी तँ हमर सभक चेहरा करखनो तनैत अछि, चोकचैत अछि, करखनो हँसैत अछि, कखनो मुस्काइत अछि। समय आ स्मृतिक गर्भ मे जायब सत्ते रोमांचक होइत छैक।

भट्टजी, माने आत्मीय आ प्रिय भाइ कलानन्द भट्ट सँ हमर परिचय 1976-77 क लगपास मे भेल छल। भट्टजी 1969 सँ सुपौल मे छलाह। सुपौल लेल पुरान आ परिचित लोक। मुदा, हमरा लेल अपरिचित। भट्टजी तखन कोशी प्रोजेक्टक किरानी बेसी छलाह, कवि कम। एहन कोनो वातावरण सेहो नहि भेटनि हुनका। जे वातावरण छल, ताहि मे भट्टजी अनेक कारणेँ मिसफिट रहथि। ओ उदास रहथि, ओ कटल रहथि, ओ बँटल रहथि। अपन एकान्त मे ओ सृजन करैत रहैत छलाह। अत्यन्त विनम्र। अत्यन्त संकोची। ओना ओ 1961 हिसँ साहित्य-सृजन करैत छलाह। 1975 मे सुपौलक परिचर्चा गोष्ठी द्वारा प्रकाशित 'संकल्प' नामक सँकलन मे ओ छपल छलाह।

ई समय छल 1976-77 केर। ई समय छल, जखन हम कविताक आरंभिक उफान मे रही। सूर्ज आ चान अपन निकटतम पड़ोसिया जकाँ लगैत छल। हिमालय आ समुद्रकेँ अपन कतबहि मे सूतल-पड़ल देखियैक। चिड़ै आ आकाश, धरती आ समुद्र, कोनो सुन्नरि लड़कीक नीलवर्ण आँखि — ई सभकिछु अप्पन लगैत छल। अत्यन्त आत्मीय। नेह-छोह सँ भरल-पुरल। कल्पनाक उड़ान मे दिन आ कल्पनाक उड़ान मे राति। समय कोना बीति जाइत छल, से पतो नहि लगैत छल। भट्टजी, हमरा ठीक एहि कालखंड मे भेटल छलाह। ओ ओहि समय मे गीत लिखैत छलाह आ एकसर मे बैसि, एकसरे बैसि गुनगुनबैत रहैत छलाह।

गुनगुनबैत रहैत छलाह आ कोनो दोसर गीतक आरंभिक पाँतिकेँ गुनैत-धुनैत रहैत छलाह। हमरा सँ भेंट भेलनि तँ सभसँ पहिने हुनक गीत मे लगभग ब्रेक लागि गेलनि। आ हम हुनक एहि प्रतिभाक उपयोग गजल लेल करब शुरू कयल। ई बात हुनको जँचलनि। गजल मैथिली मे नव विधा, तँ आकर्षणो थोड़ेक बेसी। हुनका मोन लागय लगलनि। ओहि समय मे, थाकि-गजल मे हमहुँ हाथ भाँजैत रही, मुदा अन्ततः परि नहि लागल। थाकि-हारि कऽ छोड़ि देल। भट्टजी जेना हमरे भीतरक इच्छा-आकांक्षा केँ अपन गजल मे व्यक्त करैत छलाह।

हमसभ प्रतिदिन एक-दोसरा सँ भेंट करैत रही। संग-संग बैसि कविता-गजल पढ़ैत रही, बहस करैत रही, योजना बनबैत रही। एहि गोष्ठी मे कहियो-कहियो माया बाबू, कहियो रामानुग्रह भाइ, कहियो महेन्द्र भाइ, कहियो महाप्रकाश जी, कहियो सुभाष भाइ...। एहिना जमैत रहल गोष्ठी, एहिना बढ़ैत रहल संख्या, बढ़ैत रहल उत्साह आ एहिना बढ़ैत रहल रचनात्मकता।

□

1980 क किछु साँझ मोन पड़ैत अछि। एहि साँझ सभक भेंट आ निरन्तर वैचारिकताक प्रतिफल छल 'संकल्प' नामक पत्रिका। माने ओही साँझ सभक गर्भ सँ बहरायल छल संकल्प क पहिल अंक। एकर प्रकाशन मे भट्टजी जाहि प्रकारेँ हमरा सहयोग कयने रहथि, से अद्भुत छल।

कोसी कौलोनी सँ भट्टजी पयरे विदा होइत छलाह। मूड़ी झुकौने, एक बान्हल गति मे, एक बान्हल लय मे। ठोर पर गजलक कोनो पाँति गुनगुनबैत चलि अबैत छलाह हमरा ओतय। हमहुँ तैयारे रहैत छलहुँ। हुनक अयबाक समय प्रायः निर्धारिते रहैत छल। फेर दुनू गोटे विदा होइ पुनर्वासि। एही पुनर्वास मे सड़कक काते मे रहथि सुभाष भाइ। सुभाष भाइक पूर्वाभिमुख खढ़क घर। सहस्त्र छिद्र बला टाट सँ घेरल। आगाँ मे खुजल मैदान। अगल-बगल किछु घर। हमसभ सीधे हुनक आँगन चालि जाइ। स्वागतक मुद्रा मे

ठाढ़ सुभाष भाइक ठोर पर मुस्की पसरि जानि। हमसभ बैसि जाइ आ सुभाष भाइ पात सभकें खरड़ि चूल्हि पजारथि आ चाह बनबथि। भौजी कखनो गाम आ कखनो पुनर्वसि। हमरा सभकें अद्भुत आनन्द भेटय आ सुभाष भाइक हाथक चाहक स्वाद लैत बैसल साहित्यिक-चर्चा मे लागि जाय। भट्ट जी एकाध टा गजल सुनबथि, हम एकाध टा कविता। सुभाष भाइ, माने डा० सुभाषचन्द्र यादव, एकसरे श्रोता - समीक्षक - आलोचक। बेसीकाल अपन गंभीर टिप्पणी सँ हताश आ निराश करथि। मुदा, हुनका ओतय जयबाक क्रम नहि टूटल। जहिया हमसभ नहि पहुँची, तहिया वैह ससरिकें आबि जाथि।

सुभाष भाइ लेल ई समय पहाड़ जकाँ रहनि। घोर दरिद्रा। विकट संकट, विकट यातना। मुदा, चेहरा पर तकर कोनो चेन्ह नहि। भट्ट जी नोकरी मे रहितो कोनो नीक हालति मे नहि रहि पबैत छलाह। परिवार पैघ रहनि, बच्चा सभ पढ़य- लिखयबला आ हम तँ सहजहिँ पढ़िते रही...।

एहन कोनो दिन नहि होइत छल प्रायः, जहिया भट्ट जी कोनो गजल नहि लिखैत छलाह। गजल था तँ पूरा भऽ जाइत छल वा दू पाँति वा चारि पाँति पर अटकल रहैत छल। हुनक तन्मयता देखबा योग्य होइत छल। ओ गजलक पाँति मे कतहु अटकल रहैत छलाह, कतहु हेरायल रहैत छलाह, मौने- मोन गुनगुनबैत। हुनक ई क्रिया अद्भुत छल। कतेक बेर हम दुनू गोटा कोसी- कॉलोनीक हुनक डेरा सँ विदा भेल छी आ ओ डेरे पर सँ गजलक पाँति मे हेरायल छथि, सभकिछु बिसरल, मोन मे, आँखि मे, प्राण मे मात्र एक्केटा चीज, गजल... गजलक कोनो टुकड़ी...। जँ हुनका नहि टोकी बीच मे, तँ ओ एहिना हेरायल रहताह। ओ कतेक हुनक एहन हेरायब आइयो, अखनो हमरा चकित करैत अछि। ओ आत्मलीन भऽ जाइत छलाह अपन दुनिया मे। अपन रचनालोक मे। ओ कतेक प्रतिबद्ध छलाह।

2

□

भट्ट जी जनसाधारणक कवि छलाह। जेहन जीवन, जेहन चाकरी, जेहन दुनिया हुनका भेटल छलनि, ताहि मे 'सुख' नामक अनुभूति क गुंजाइश कम रहनि। ओ अपन जीवन, अपन स्थिति आ अपन दुनियाक गजल लिखैत छलाह। ई दुनिया एकटा सामान्य जनक दुनिया छल। दलित- पीड़ित आ उपेक्षितक प्रति हुनक मोन कतेक आर्द्र आ तरल आ सहानुभूति सँ भरल रहैत छल, तकर अनेक उदाहरण हमरा मोन अछि। हुनक अनेकानेक गजल एहि भाव- भूमि कें व्यक्त करैत अछि। हुनक गजलक केन्द्र मे भारतीय आम जनता अछि।

ओ कहियो बनौटी नहि देखौलनि। जँह छी, सैह छी, जहिना छी, तहिना छी- एहिमे हुनक विश्वास रहनि। हुनक पहिरन- ओढ़न मोन पड़ैत अछि। अत्यन्त साधारण, अत्यल्प मोली हैण्डलूमक एकरंगा कमीज ओ पहिरैत छलाह। कमीज, धोती आ हवाइ चप्पल। अत्यन्त साधारण वेशभूषा। लड़ुरिया नान्हि- नान्हि टा केश। आँखि पर पावरबला चश्मा। बात- बात मे द्रवित होबऽबला, पघिलि जाइबला सम्वेदनाक कवि। हुनक छोटकिनमी आँखि मे सामान्य जनक प्रति तरलता भरल रहैत छलनि लबालब। उबडूब करैत तरलता आ निश्छल प्रेम। भीतर सँ एतेक आ एहन उदार प्रवृत्तिक लोक ठीके कम होइत छैक। मोन मे कोनो छुआ- पाँच नहि। ककरो सँ कोनो भेद- विभेद नहि। यैह कारण थिक जे 'कविजी' नामें ख्यात भट्ट जी कोसी-कॉलोनी परिसरे मे नहि, सौंसे सुपौल मे लोकप्रिय छलाह। सरलता आ सहजता जहिना हुनक काव्य मे भेटैत अछि, ठीक तहिना हुनक व्यक्तित्वो छलनि।

□

प्राय: 1980 क कोनो दुपहर छल। भट्टजीक कार्यालय मे ओहि दिन अवकाश रहनि। ओ टहलैत विदा भेलाह आ हमरा ओतय पहुँचलाह। अबिते कहलनि — 'तैयार होअह आ चलह सुभाषक ओतय।'
'से की भाइ?' हम अकचकाइत पुछलियनि।
'चलह ने बाटे मे कहबह। अद्भुत संयोग भेलै आइ।' ओ कहैत बैसलाह।

हम अत्यन्त उत्सुक छलहुँ। मुदा आइ भट्टजी जेना अपन ठोर सीबि लेने रहथि। तैयार भऽ विदा भेलहुँ। सड़क पर अबिते पुछलियनि— 'कहन संयोग भाइ, कहू ने आब?'
'हौ मरदे, आइ तीन टा गजल सुतरल। तीनू एकाएकी। जेना हिमालय सँ उतरैत हो चिड़ै...। तीनू फेयर कयने छी। चलह, आइ सुभाष कैं सुनयबनि आ चित कऽ देबनि।' हुनका स्वरमे अहलदिली छलनि, उत्फुल्लता छलनि, परम संतोषक भाव छलनि।

हम गुम्म। यैह... आ एहि लेल एतेक तैयारी...।

सुभाष भाइक घरसँ सटले बरहमथान। बरहमथानक अगल-बगल किछु झिल्ली-मुड़ही-कचड़ीक दोकान, किछु चाहक दोकान, किछु पानक दोकान। पच्छिम भरसँ चलि अबैत लोक सभक सुस्तयबाक खुशफैल जगह। ओहिठाम एकटा पानक दोकान पर भट्टजी रुकि गेलाह। दस टा बीड़ी लेलनि आ फेर विदा भेलाह। हम चुपचाप हुनका संग रही। लगैत छल भट्टजी आइ बेस प्रसन्न छथि। बेस सन्तुष्ट।

सुभाष भाइ उघारे देह एकटा चरखाना लुंगी पहिरने पटिया पर पड़ल कोनो पोथी पढ़ि रहल छलाह। हमसभ असमय पहुँचल रही, ओ कने चकित भेल उठलाह। स्वागत करैत बजौलनि। हमसभ पटिया पर बैसलहुँ। सुभाष भाइ पोथी समेटि राखि देलनि— 'की हालचाल?' पुछलनि।

(3)

जावत भट्टजी किछु बजितथि, हम कहलियनि — 'सुभाष भैया, आइ भट्टजी हिमालय पर गेल रहथि, ओतय सँ सोझे तोरे लग अयलाह अछि।'

सुभाषो भाइ गुम्म। भट्टजी तरतर, चुपचाप मुस्काइत। निश्चिन्त। निर्विकार। परम संतुष्ट भावेँ उपरका जेबी मे हाथ देलनि आ तीनपेजिया कागत बहार कयलनि। कहलनि — 'आइ सुनियौ तँ हमर गजल आ कहू जे केहन भेलै-ए।'

आ ओ एकाएकी तीनू गजल पढ़लनि। रुकि-रुकि कैं, रचि-रचि कैं, वातावरण कैं तौलैत, गंभीर स्वरेँ।

आ वातावरण! ओह, ठीके जेना क्षण रुकि गेल हो निमिष भरि लेल। हमसभ स्तब्ध भेल हुनका सुनैत रहलहुँ। भीतर मे लागल जेना किछु उनटि-पुनटि रहल हो, भीतर मे जेना हाहाकार भरि गेल हो। स्तब्धता आ हाहाकार। हाहाकार आ स्तब्धता। दुनू विपरीत मुदा दुनू अपन उपस्थिति दर्ज करबैत। सभक मौन भारी भऽ गेल छल क्षण भरि लेल।

हम चुप रहलहुँ। मौन तोड़लनि सुभाष भाइ। सुभाष भाइ निरपेक्ष भावेँ ओहि गजल पर कहैत रहलाह, कहैत रहलाह आ बहुत कहलनि। कोनो रचना पर एतेक बेसी कहबाक आदति सुभाष भाइक नहि रहनि। अखनो नहि छनि। मुदा गजलक कथ्य एतेक कहबा रहल छलनि। भट्टजी आ हम एकान्त भावेँ सुभाष भाइकेँ सुनैत रहलियनि। भट्टजीक आँखि नोरा गेल रहनि। ओहि नोर कैं, भट्टजीक भीजब कैं हम दम साधने, चुपचाप देखैत रहलहुँ।

सत्र समाप्त भेल। सुभाष भाइ चाहक ओरिआओन मे लगलाह। आमक सुखायल नान्हि-नान्हि टा लकड़ी। किछु खढ़-पतार। आँगनक एक कोन मे गोबर-माटि सँ नीपल दुचूल्हिआ। पवित्र। दूध, पत्ती आ चीनी चूल्हि लग रखलनि। चाहक बासन आ सीसाबला छोटकी गिलास। सभ व्यवस्था भेल मुदा सलाइ?

गोइठाक एकटा टुकड़ी लेने सुभाष भाइ चुपचाप विदा भेलाह। हम आ भट्टजी पटिया उठा चूल्हि लग बैसि गेलहुँ। एक-दोसराक आँखि मिलल

आ जावत किछु बाजी, तावत सुभाष भाइ कोनो आन आँगन सँ गोइठा पर आगि लऽ अनलनि। चूल्हि पजारल गेल। चाह बनल आ हमसभ पीलहुँ। सुभाष भाइक चेहरा पर कोनो आन भाव नहि, जेना एहने भाव हुनक स्थायी भाव भऽ गेल रहनि। मुदा, भट्टजीक आ हमर चेहरा पर एकटा अजीब सन विवशताक चेन्ह खिंचा गेल रहय...। भट्टजी जेबी सँ बीड़ी बहार कयलनि, सुभाष भाइ मुस्काइत सुनगौलनि...।

साँझ भऽ गेल रहय आ हमसभ उठबा लेल चाहैत रही। सुभाष भाइ बरहम थान धरि अरिआति देलनि। विदा भेलहुँ। हमदुनू गोटे मौन। निःशब्द। जेना शब्द हेरा गेल हो। जेना शब्द देह रूपी समुद्रक अतल तलमे पँसि गेल हो आ चाहियो कऽ बहार नहि होइत हो...।

लेखकक जीवन...। केहन विडम्बना थिक। जकरा भीतर मे रचनाक आगि भरल हो, लहलह करैत हो, तकरा घरमे चूल्हि पजारबाक निमित्त आगि नहि...। मोन भरि आयल छल। आइ ओहि दिनक घटनाकेँ मोन पाड़ैत छी तँ ठीके हमर रोम-रोम सिहरि जाइत अछि।

□

भट्टजी पर लिखैत, आइ हमरा मोन पड़ैत अछि हुनक हिन्दीक दीर्घ कविता-संग्रह — 'चिंगारी।' चिंगारी 1974 मे प्रकाशित भेल छल आ आपातकालक समय मे (1975) हुनका एहि लेल यातना भोगय पड़ल छलनि। प्रशासनक नजरि मे ओ चढ़ि गेल रहथि। हुनका पर सदति नजरि राखल जाय लागल। मुदा, एहि सँ ओ विचलित नहि भेल रहथि। बहुत बाद मे, हुनका मुहेँ चिंगारीक पाठ सुनैत, हमरा बेर-बेर कबीरक साखी सभ मोन पड़य। वैह आगि, वैह विद्रोह, वैह उष्णता। पाठ करैत काल हुनक चेहरा रक्ताभ भऽ जानि, माथक नस सभ तनि जानि...।

4

तहिना 'कान्ह पर लहास हमर' आइ उदयचन्द्र झा विनोद, भाइ विभूति आनन्द आ हमरा प्रयासेँ तीन दिनक भीतरे मुरलीधर प्रेस, पटना सँ बहरायल छल। गजलक ई संग्रह मैथिली मे बेस चर्चित आ प्रशंसित भेल। एकर भूमिका मे भट्टजी स्वीकार कयने छथि जे गजल हुनक अभिव्यक्तिक सभसँ सहज-सुलभ माध्यम रहनि...।

ओ 1969 सँ मइ 1986 धरि सुपौल मे रहलाह। सुपौलक तमाम सांस्कृतिक आयोजन मे ओ हमरा संग सर्वाधिक सक्रिय रहलाह। दिन-रातिक संगी जकाँ, जेठ भाइ जकाँ, अत्यन्त आत्मीय जकाँ। हुनक प्रकृति, हुनक स्वभाव ठीके विरल छल।

□

सुपौल सँ 1986 मे जखन हुनक बदली भेलनि तँ 8 मइकेँ उहटी पहुँचि ओ सर्वप्रथम हमरा पत्र देलनि — 'प्रिय केदार, हम सकुशल घर पहुँचि गेलहुँ। पुरिबा बहैत छल। प्रभावहीन पियरौन रौद छल। बस सँ उतरला पर गामक सुन्दर, सोन्हगर सुगंध जेना एकबेर फेरो मोहित कऽ लेलक। बहुत-बहुत भूलल स्मृति सभ मोन पड़य लागल। ठेला पर सभ वस्तुजात लदबा पैदले पत्नीक संग विदा भेलहुँ। नीक लगैत छल।

'उड़ल पुरिबा मे अहाँ केर ई सुन्नर आँचर' गजलक पँक्तिक साक्षात दर्शन भेल। पत्र लिखबा सँ कने पूर्व एक हजार खपड़ा कीनि कऽ मंगाओल अछि, घरकेँ काल्हि छड़ायब। अगिला महीना मे दोसर घरक मरम्मतिक व्यवस्था करब। दरबज्जाक बरामदा मे बैसल अहाँकेँ पत्र लिखि रहल छी। सुग्गाक पिंजड़ा टांगल अछि। चितकबरा कुक्कुर मूड़ी उठाकऽ परिचय प्राप्त करबाक प्रयास कऽ रहल अछि। पुनिया (बेटी) चाह दऽ गेल अछि। मनोज (जेठ पुत्र) सुपौल बजार गेलाह किरानाक वस्तु लेल। छोटू (तेसर पुत्र) गहूमक दाम बुझबा लेल गेलाह अछि। नन्हें (छोट पुत्र) हमर भातिजक नेनाक संग खेला रहलाह अछि। पत्नी अर्थात अहाँक भौजी महिला समाजक संग परिचय देमऽ आ लेमऽ मे लागलि छथि। गाँगट-उघार लोक। किछु भीतर सँ ठोस आ किछु भीतर सँ खुक्खड़। लोक सभ अबैत अछि। पत्र लिखबा मे गतिरोध होइत अछि मुदा नीक लगैत अछि...।'

सुपौल सँ हुनक बदली किशनगंज, पूर्णिया भेल छलनि। ओहिठाम सँ ओ 29 जुलाइ 86 कें एकटा कार्ड पठौलनि— 'प्रिय केदार, हम नीक जकाँ पहुँचि गेलहुँ। 'रिमझिमक शोर संग जल निकलल।
आँचरक कोर सँ गजल निकलल।'
बस मे बैसल रही, प्रकृति कें देखैत रही, गजल कें गुनैत रही। कखन भोर भेल, नहि जानि सकलहुँ। प्रकृतिक मनोहारी रूप ओ अद्भुत छटा हृदय-प्रदेशक कोमल मखमली फर्श पर रखनो नाचि रहल अछि...।'

अपन गामसँ 14 अगस्त 86 कें ओ एकटा कार्ड मे लिखैत छथि— 'प्रिय केदार, पत्र प्राप्त भेल। आशो छल जे गाम जाइत अहाँक पत्र प्राप्त हैत आ मोन मे गेना फुला जायत। घनगर आमक गाछी तँ छैके, बरिसात मे आरो घनगर बुझाइत छैक। चारू दिस हरियरे-हरियर। संध्या काल गंगा बाबू क (ग्रामीण आ बाल-संगी) संग धारक कात मे, मन्दिरक परिसर मे, पीपरक गाछक नीचाँ बैसैत छी—

गाछ पीपर, नदी कात, साँझुक पहर
बदलैछ अमृत मे भीषण जहर

हिलकोर सँ रुबाइ आ गजल हमरा दिस अबैत अछि, हर्षित भऽ ग्रहण करैत छी। विभिन्न रूप, विभिन्न छटा। आँखिक आकर्षण जतयधरि जाइत अछि, वाद्य-बीनक इन्द्रधनुषी आभा सँ गदगद भऽ उठैत छी...।'

28 मइ 87 क ओ अपन कार्ड मे मैथिलीक पत्रिका आ तकर व्यवस्था आ मैथिलीक प्रति कतेक चिन्तित छथि, तकरा देखल जाय— 'प्रिय केदार, अहाँक पत्र प्राप्त भेल। 'हालचाल', 'कोशी-कुसुम' कें अहाँक पत्रक पहिने एक-एकटा गजल तथा एक-एकटा गीत पठौने छियैक। 'लोकवेद' कें सेहो गीत आ गजल तथा दस गोट रुबाइ 'हिलकोर' क नाम सँ पठा देने छियैक, रहिकाक पता पर। कोनो पत्र नहि प्राप्त भेल अछि 'लोकवेद' सँ। अहाँक कथनानुसार 'हालचाल' कें किशनगंज गेलाक पश्चात किछु रुबाइ पठा देबैक। सभ सँ कमी छैक मैथिली पत्रिकाक जे ओ किछुए व्यक्तिक भऽ कऽ रहि जाइछ। मुँह देखि मुँगबा बँटैत अछि। जकर फल होइछ जे किछु दिनक पश्चात बन्द भऽ जाइछ। 'कोशी कुसुम' एतय पचीस प्रति खपबैत छी। मुदा हिनकालोकनि कें पत्रोत्तर देब कठिन होइत छनि। मैथिल जँ अपन मैथिलाम छोड़ि कऽ सदर्थ काजक दिस बढ़थि तँ सफलता निश्चिते छैक मुदा से होइत नहि छैक...।'

रहिना किशनगंज सँ 2 नवम्बर 87 कें ओ लिखैत छथि— 'प्रिय केदार, बुझले अछि जे 87क बाढ़िक प्रकोप मे पड़ि गेल रही। कोनहुना घर ठाढ़ कऽ सकलहुँ अछि। बाँस हमरा ओतय चालीस टाका मे बिकाइत अछि। एहि सँ आन वस्तुक अनुमान कऽ ली। अहाँ सँ भेंट करबाक इच्छा बहुत भऽ रहल अछि। मुदा समय आ मुद्राक विभीषिका एम्हर-ओम्हर डोला रहल अछि। 6 तारीख कें रेडियो रेकर्डिंग अछि, नहि तँ अवश्य अबितहुँ। 20-25 धरि घुरती मे अवश्य भेंट करब। अहाँ सँ भेंट भेला पर काव्य-गरिमा भेटैत अछि। अबैत रही तँ साकेतानन्दजी सँ भेंट भेल। ओहो पूर्णिया धरि ओही बस सँ अयलाह। हुनक बदली मध्यप्रदेश भऽ गेल छनि। हुनक यात्रा-वृतान्त सुनलहुँ। स्थान-स्थानक लोक सभक रहन-सहनक मादे सुनलहुँ आ सुनलहुँ हुनक वंश-परम्पराक उत्थान-पतनक कथा। खूब मोन लागल। सही मे ओ आपादमस्तक साहित्यिक गरिमाक लोक छथि...।'

हमरा निरन्तर हुनका सँ पत्र-व्यवहार होइत छल। ओ बहुत सहज भऽ कऽ अपन समस्या सभक विषय मे लिखैत छलाह।

मैथिली आ हिन्दी मे ओ निरन्तर छपैत रहलाह। हुनक किछु गीत सभक कैसेट सेहो बनल, जे अखनो दरभंगा रेडियो सँ प्रसारित होइत अछि। ओहि गीत सभ मे एकटा गीत बेस चर्चित अछि— 'हम छिकहुँ सिपाही हिन्दुस्तानी...।'

ओ 'बनैत घरक डाह' नामक कथा लिखलनि, 'नोट नहि, हमरा टाका चाही' नामक नाटक सेहो लिखलनि आ एकरा सभक अतिरिक्त हुनक गजलक एकटा संग्रह, रुबाइक एकटा संग्रह, गीतक एकटा संग्रह आ खंडकाव्यक एकटा संग्रह अप्रकाशित अछि। हुनक किछु निबंध, किछु सामयिक टिप्पणी सभ सेहो पत्र-पत्रिका मे प्रकाशित अछि।

एहि सभक अतिरिक्त भट्टजी वैद्य सेहो छलाह। ओ 1955 मे मध्यमा कयलनि। तकरा बाद 'साहित्य भूषण' आ 'आयुर्वेद शास्त्री' सेहो भेलाह। हुनक मूल गाम उछटी, बिरौल थिक। हुनक पिता स्व० इन्द्रदेव मिश्र प्रसिद्ध वैद्य छलाह। हुनक विवाह नारायणपुर, सकरीक प्रसिद्ध वैद्य श्री जयकिशोर मिश्रक पुत्रीक संग भेल छलनि। ओ अपन नोकरीक क्रम मे कुनौली, सकरी, झंझारपुर, सुपौल, किशनगंज आ अंतिम समयमे सप्ता, मधुबनी मे रहलाह। सभ सँ बेसी ओ अपन नोकरी सुपौले (19 नवम्बर 1969 सँ 6 जून 1986 धरि) मे कयलनि।

15 मइ 1941 केँ हुनक जन्म भेल रहनि आ 5 अक्टूबर 1994 केँ ब्रेन हेमरेज सँ हुनक असामयिक मृत्यु भऽ गेलनि। ओ अखन पाँच वर्ष आरो नोकरी करितथि मुदा...।

□

भट्टजीक संग बिताओल समय हमरा लेल बेस महत्त्वपूर्ण अछि। ओहि समय केँ, ओहि एक-एक क्षण केँ लिखब समय-साध्य अछि। ओ हमर परम आत्मीय जेठ भाइ छलाह। एहन भाइ, जनिका कान्ह पर माथ राखि कानल जा सकैत ~~छल~~, जनिका संग उन्मुक्त भऽ हँसी-ठट्ठा कयल जा सकैत छल, ~~सकैए~~, जनिका संग जीवनक गोपनीय सँ गोपनीय प्रसंग कहल जा सकैत छल... से भाइ, हमरा, अहाँ केँ, सभकेँ छोड़ि चलि गेलाह...। समय भेला पर हुनका लेल हमरा आओर लिखय पड़त, कियैक तँ एहि संस्मरण मे हम, भट्टजी क बारे मे थोड़बे बात कहि सकल छी... बात ततेक अछि जे...। हुनके गजलक एक पाँति उधार लैत कहय चाहैत छी —

'दर्दक अभिव्यक्ति ने शब्द कोनो भेटि रहल।
गुमसुम हम मूर्त्ति जकाँ प्राण अछि हताश हमर।'

□ □ □

[signature]

किसुन कुटीर
सुपौल
852131.

चन्द्रशेखरजीकेँ प्रेषित
3/5/95

रचनाकाल — 2.4.95 सँ 6.4.95 धरि